भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

बच्चों की देखभाल

इन्द्रजीत लाल

H
028.5 L 15 B
028.5
L15B

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

बच्चों की देखभाल

Bachchon Ki dekhbhal

Indrajeet Lal

इन्द्रजीत लाल

CATALOGUED

Rashtriya Prauh Shiksha Sansthan
Delhi

प्रकाशक : राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा संस्थान, 30/21-ए/22-ए/ विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032 / मूल्य : पांच रुपये मात्र / आवरण : जोशी / संस्करण : 1988

शर्मा फाईन आर्टस, गांधीनगर, दिल्ली ३१

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय

शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/~~श्रीमती~~/कु० इन्द्रजीत लाल ने, उनकी पाण्डुलिपि बच्चों की देखभाल (उर्दू) के लिए प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा वर्ष १९८६ में आयोजित नवसाक्षरों हेतु साहित्य-संरचना की 28 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता योजना के अन्तर्गत भारत सरकार का पुरस्कार प्राप्त किया।

SERIAL NO DEA/N.P.C.S./No.F.17-28/86-DAE(PC)-60
क्रमांक प्रौढ़ शि० नि०/रा० पु० प्र० यो०/
New Delhi
नई दिल्ली 1.5.1987
Dated
दिनांक

Director
निदेशक

Checked by SKS

लेखक की ओर से

हर बच्चे में कुछ छानबीन करने और कुछ नई-नई बातें जानने का शौक होता है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप बच्चे में इस तरह की इच्छा अथवा प्रवृत्ति का विकास करें। सच तो यह है कि नन्हे-मुन्नों की हर बात में क्या, क्यों और कैसे—बड़े अर्थ रखते हैं। इसीलिए बच्चों के शिक्षकों, मां-बाप, संरक्षकों को और खास तौर पर बच्चों में स्वयं अपने-आप को समझने की प्रवृत्ति का अधिक-से-अधिक विकास करना चाहिए। प्रत्येक बच्चे में दूसरों की नकल करने और सोच-विचार करने की पूरी शक्ति प्रकृति ने प्रदान की है। अगर हम लोग सच्चाई औ ... की इस शक्ति को प्रोत्सा ... वे अपने जीवन में आम अ ... र बन कर उभरें।"

—श्री अरविंद घोष

Library IIAS, Shimla
H 028.5 L 15 B
00077949
H 028.5 L15B
Acc. No. 77949
12/3/92

बच्चे कल के नागरिक

यदि कभी आप दुनिया के नक्शे अथवा इतिहास पर दृष्टि डालें तो आपको पता चलेगा कि न केवल एशिया बल्कि दुनिया भर के देशों में हिन्दुस्तान एक महान और लम्बा-चौड़ा देश है। इसमें कई भाषाएं बोलने वाले, कई धर्मों और मजहबों को मानने वाले, कई तरह के रहन-सहन वाले सत्तर करोड़ से अधिक मानव निवास करते हैं। हमारी सरकार ने आजादी के बाद के वर्षों में हिन्दुस्तान की खुशहाली के लिए नए रास्ते निकाले। नई-नई योजनाएं बनाईं और नए-नए तात्कालिक लक्ष्य सामने रखे। जिन पर अमल करने से हिन्दुस्तान एक सीमा तक खुशहाल और विकसित भी हुआ। लेकिन इस तरह के विकास और निर्माण के कामों के लिए सारी जिम्मेदारी सरकार

पर ही डाल देना न तो बुद्धिमानी की बात होगी और न ही व्यावहारिक रूप से उचित।

हम सब अपने समाज के अंग हैं। हमारा भी यह पवित्र कर्तव्य है कि हम अपने देश की भलाई और खुशहाली के लिए, वे सब तौर-तरीके अपनाएं जिनके सहारे हमारी खुशहाली का मार्ग सरल हो सके। यदि हम फले-फूलेंगे, लिखे-पढ़ेंगे अथवा खुशहाली की ओर कदम बढ़ाएंगे, तो एक दिन सारा देश खुशहाल हो जाएगा और हम अन्य विकसित राष्ट्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो सकेंगे।

वैसे भी पशु-पक्षियों और अन्य प्राणियों के मुकाबले मनुष्य को ही यह विशेषता प्राप्त है कि वह उन सबसे अधिक बुद्धि रखता है, ज्ञान और बुद्धि के वरदान को समझता है और उन्हीं के सहारे अपनी खुशहाली और भलाई के रास्ते निकालता है। आप किसी उन्नत कौम अथवा राष्ट्र के इतिहास पर दृष्टि डालें तो आप को उस राष्ट्र की उन्नति और खुशहाली के

पीछे एक ही रहस्य का पता चलेगा कि उस राष्ट्र ने अपने नौनिहालों की शिक्षा और लालन-पालन पर पूरा ध्यान दिया है। वास्तव में हमारा भविष्य हमारे बच्चे हैं। उनकी सही खुशहाली तभी हो सकती है जब हम उनकी उन्नति और विकास के लिए वे सब रास्ते अपनाएं, जिनके सहारे वह खुशहाल, लिखे-पढ़े और सुसंस्कृत नागरिक बन सकें। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। कल के इन नागरिकों को बनाना, संवारना, लिखाना-पढ़ाना, अच्छी शिक्षा देना, सुसंस्कृत बनाना और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने में मदद देना हमारा कर्तव्य है, ताकि हर नौनिहाल अच्छा नागरिक बनकर अपने देश का नाम ऊंचा कर सके।

एक शिक्षाविद के शब्दों में "बच्चे हर राष्ट्र की पूंजी हैं। सभी बच्चों की अच्छी शिक्षा, अच्छा लालन-पालन, अच्छे संस्कार और अच्छी देखभाल के द्वारा ही मां-बाप और

शिक्षक बच्चों को उन्नत और सुसंस्कृत नागरिक बना सकते हैं। इस तरह बच्चों के अच्छे, नेक और उन्नत बनने से ही किसी राष्ट्र की तरक्की की आशा की जा सकती है।"

आप जानते हैं कि पुराने जमाने में बच्चों की शिक्षा और देखभाल के तरीके लोगों को ज्ञात न थे। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे कई राष्ट्र तबाह हो गए। कारण बच्चे अपने मां-बाप की उदासीनता अथवा अज्ञान के कारण बच्चे अपने आप को सुशिक्षित, उन्नत और सुसंस्कृत नहीं बना सके। दूसरे शब्दों में उनके सामने अपने जीवन में चलने का कोई सही रास्ता न था।

आज के वैज्ञानिक युग का यह परिणाम अवश्य आया है कि कम-से-कम पश्चिमी देशों में तो यह अनुभवकिया जा रहा है कि बच्चों की बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक विकास की ओर भी पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए। इतिहास बताता है कि जिन राष्ट्रों ने

बच्चों की देखभाल की ओर पूरा ध्यान दिया है, वहां के बच्चों ने बड़ी उन्नति की है। बच्चे हमारा भविष्य हैं, हमारी राष्ट्रीय पूंजी हैं, हमारी प्रतिभा और परम्परा के रक्षक हैं। इसलिए खुशहाली और भलाई का जो भी रास्ता अपनाया जाए, उसमें बच्चों की उन्नति और भलाई को अवश्य दृष्टि में रखा जाना चाहिए। वह रास्ता ही सही रास्ता होगा।

हिन्दुस्तान की लगभग ४० प्रतिशत् जन-संख्या बच्चों की है। अथवा यों कह लें कि २८ करोड़ बच्चे हिन्दुस्तान के भावी नागरिक हैं। इन बच्चों का एक बड़ा हिस्सा घरेलू नौकरों का काम करता है अर्थात् उन्हें अच्छी शिक्षा और लालन-पालन के अवसर प्राप्त नहीं हैं। इनके मां-बाप आर्थिक दृष्टि से इतने खुश-हाल नहीं हैं कि अपने बच्चों की सन्तोषजनक शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध कर सकें अथवा उनके चरित्र-निर्माण या पालन-पोषण की ओर पूरा ध्यान दे सकें। इसी तरह लाखों बच्चे कार-

खानों में काम करते हैं। कुछ खेतों में अपने और कुछ अन्य मजदूरी के काम करते हैं। कुछ गरीबी के कारण दुर्दशाग्रस्त जीवन व्यतीत करते हैं। वास्तव में हिन्दुस्तान में बच्चों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी के कारण मां-बाप का कमाई करने में हाथ बंटाता

मां-बाप और बच्चे

है। यह एक सामान्य विवशता है गरीबी की। इसका इलाज तो राष्ट्रीय स्तर पर ही हो सकता है। इसका तात्कालिक इलाज कोई नहीं है। हां, अगर मां-बाप कम-से-कम बच्चे

पैदा करने की ओर ध्यान दें अर्थात् परिवार नियोजन के कार्यक्रम को सफल बनाएं तो इस तरह मां-बाप को दो या तीन बच्चों की शिक्षा और लालन-पालन का भार उठाना पड़ेगा और यह अधिक सुचारू ढंग से संभव हो सकता है। दूसरे शब्दों में, जब आबादी थोड़ी और सीमित होगी तो लोग अपने जीवन की गाड़ी ज्यादा सफलता से चला सकते हैं। इस तरह बच्चों को शिक्षित बनाया जा सकता है। यों समझ लें कि परिवार नियोजन एक रास्ता है जिसके आधार पर छोटा परिवार बड़े परिवार के मुकाबले अधिक उत्साह से सफल हो सकता है।

मुख्य नियम

मां-बाप और शिक्षकों के लिए बच्चों की देखभाल के मुख्य नियम जान लेना आवश्यक

मां और बच्चा

ह । शायद कुछ लोग यह कहेंगे कि हमारे पास इतना अवकाश कहां है कि दुनिया भर के काम धंधों से समय निकालकर बच्चों की देखभाल के नए तौर-तरीके अपना सकें ? इसका उत्तर यह है कि ऐसे व्यस्त मां-बाप जिनकी तबियत में थोड़ी जिम्मेदारी से चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है, बच्चों की देखभाल अच्छी तरह कर ही नहीं सकते। ऐसे मां-बाप के चिड़चिड़ेपन का असर बच्चों पर उल्टा ही पड़ता है। मेरी सलाह ऐसे मां-बाप के लिए नहीं है जो बच्चों की देखभाल के लिए समय और शक्ति दोनों खर्च करते हैं, बल्कि ऐसे मां-बाप के लिए है जो बच्चों की देखभाल को एक भारी बोझ समझकर टाल देते हैं अथवा देखभाल के बारे में शिकायत करते हैं।

कभी आपने मां का लोरी गीत सुना है ? यों समझ लें कि वह स्वर्ग में बैठी झूला झूल रही है। इस समय वह सब कुछ भूल जाती ह। उसकी दुनिया उसका बच्चा होता है।

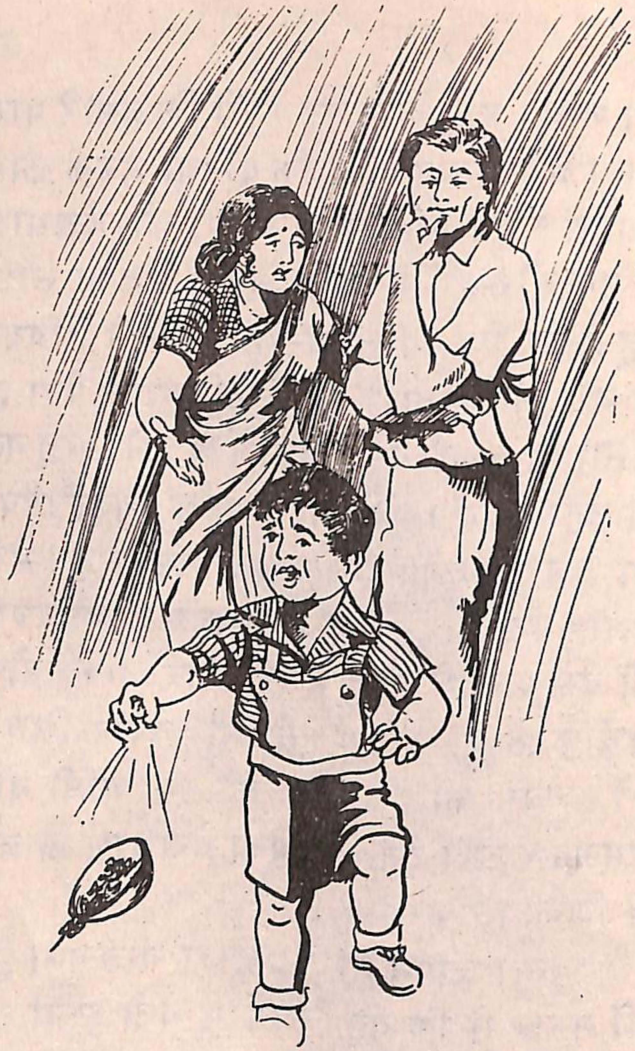

मां-बाप खिलौने से बच्चे को मनाते हुए

मां की ममता और लालन-पालन बच्चे के व्यक्तित्व में बड़ा योग देते हैं। मां का प्रेम बच्चे के जीवन को उज्ज्वल और आदर्श बना सकता है। मां अपने मधुर स्वभाव से बच्चे में ऐसा जौहर पैदा कर सकती है, जिससे वह आगे चलकर, जवान होकर और शिक्षित बनकर राष्ट्र की अच्छी निधि सिद्ध हो सकता है। जिन बच्चों को बचपन में मां का प्रेम मिलता है, उनमें सहानुभूति, सच्चाई और इन्सानी भाईचारे की भावनाएं पाई जाती हैं। ये भावनाएं जीवन की सफलता के लिए ही आवश्यक ही नहीं हैं, बल्कि अच्छे और सभ्य नागरिक की विशेषताएं भी हैं।

मां-बाप को बच्चों की देखभाल और लालन-पालन में जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए और न ही अपनी मर्जी से किसी खास किस्म की कोई खूबी जबर्दस्ती ठूंसने की कोशिश करनी चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि कई बच्चों में अज्ञानवश अथवा

शरारतीपन के कारण ऐसी आदतें पाई जाती हैं जो समाज की दृष्टि से अनुचित होती हैं अथवा जिनके कारण बच्चों के मां-बाप भी बदनाम हो जाते हैं। ऐसी बुरी बातें, अनुचित आदतें और शरारतें बच्चों को आवारा और शरारती बना देती हैं। दूसरे मां-बाप यह भी चाहते हैं कि उनकी सन्तान नेक कामों और नेक आचरण से उनका सिर ऊंचा करे। इसीलिए तो माताएं आम तौर पर यह सीख देती हैं कि खिलौने इस तरह रखा करो, घोड़े को यों खड़ा करो, मोटर चलाने के लिए चाबी यों दी जाती है, अतिथियों के सामने शरारत नहीं करते आदि। अर्थात् अच्छे, नेक और सही काम की शिक्षा देना हर मां का नित्य प्रति का पाठ होता है जो वह बातों-बातों में अपने बच्चे को दिमाग में डालती रहती है।

इससे प्रकट होता है कि शिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत माताएं अपने अनुभव और सामाजिक शिष्टाचार से लाभ उठाकर अपने

बच्चों को भी सभ्य और उन्नत बनाना चाहती हैं। किन्तु वे शायद यह बात भूल जाती हैं कि जिन बच्चों में वे कोई विशेषता पैदा करना चाहती हैं, अभी उनकी उम्र ही कितनी है, उनका बौद्धिक स्तर अभी क्या है, उनकी समझ-बूझ कितनी है ? क्या बच्चा इस योग्य है कि वह बड़ों के रोब और पाबन्दियों को सहन कर सके ? हो सकता है मां-बाप यह चाहते हों कि उनके बच्चे वे बातें सीख लें जो उन्होंने स्वयं जवान होकर सीखी थीं। इस लिए यह बात अधिक विश्वसनीय है कि बच्चा धीरे-धीरे उनके साथ अच्छी और नेक बातें सीख लेता है। मां-बाप को अपनी हर बात समझाने के लिए बच्चों की उम्र, उनकी सूझ-बूझ और उनके बौद्धिक स्तर को अवश्य दृष्टि में रखना चाहिए। इसके साथ-साथ कुछ प्रकृति पर भी छोड़ देना चाहिए कि वह धीरे-धीरे बच्चों को अपनें तौर पर सही रास्ते पर लाए अथवा उनके स्वभाव को सही मोड़

दे। श्री अरविन्द आश्रम की भूतपूर्व संचालिका श्रद्धेय मां ने लिखा है "दुनिया में सबसे मूल्यवान उपहार जो हम किसी बच्चे को दे सकते हैं वह यह है कि उसे सिखाने की कोशिश करें कि वह बच्चा अपने आप को पहचाने और एक तरह अपना शिक्षक खुद ही बन जाए।"

अहंकारी बच्चे

कई बच्चे असाधारण रूप से अहंकारी होते हैं। उनका अहंकार मां-बाप को बहुत बुरा लगता है। कोई बच्चा यदि अपनी हैसियत और परिस्थितियों से बढ़कर निकले तो वह बहुधा अहमन्य हो जाता है या अपनी मनमानी करता है। मां-बाप तो क्या समाज में कोई भी आदमी इस आदत को पसन्द नहीं करेगा। जीवन में बहुत कुछ सीखने के लिए बड़ी विनम्रता और धीरज की आवश्यकता

होती है। यही कारण है कि अहंकारी बच्चा बदनाम होकर रह जाता है। इस बारे में भी यह याद रखना चाहिए कि हर बच्चे का अपना व्यक्तित्व होता है। समझदार मां-बाप जानते हैं कि उनके बच्चे का व्यक्तित्व दूसरे बच्चे के मुकाबले पनपे तो उसके लिए उसके व्यक्तित्व को थोड़ी छूट देनी होगी अर्थात् उसकी बात को भी मानना होगा। यों कहें कि अगर बच्चा बुद्धिशाली हो और उसका स्तर औसत से कुछ ऊपर हो तो उसकी बात फौरन रद्द नहीं करनी चाहिए। दूसरे, बच्चों की हर हरकत पर टोकना नहीं चाहिए और न ही उससे हर बात कराने की जिम्मेदारी खुद मां-बाप को अपने सिर लेना चाहिए। बच्चों का मार्गदर्शन आवश्यक है, लेकिन शत-प्रतिशत मार्गदर्शन न जरूरी है और न उचित ही।

एक आम अनुमान के अनुसार बच्चों को उनके तीन-चौथाई कामों में पूरा अधिकार

होना चाहिए अर्थात् वे जिस तरह चाहें या जो चाहें, उसी तरह उन्हें करने दिया जाए। समझदार मां-बाप बच्चों को उनकी मर्जी पर छोड़ देते हैं। मां-बाप इसके साथ-साथ अपने बच्चों को लाभदायक सलाह जरूर देते हैं, पर इस तरह देते हैं कि न तो बच्चों की भावनाओं को ठेस लगे और न ही उनके मन में नाराजगी पैदा हो। यह एक मनोवैज्ञानिक विषय है और यदि मां-बाप ठीक ढंग से बच्चों को आदेश दें तो बच्चे जरूर उनकी सलाह का सम्मान करेंगे। मां-बाप बच्चों को क्या समझाना चाहते हैं, इसका ढंग भी बड़ा महत्व रखता है। यों कहें कि खुद मां-बाप का समझदार और बुद्धिमान होना जरूरी है।

माँ-बाप को अपने बच्चों के साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहिए ताकि बच्चे आजादी से खुलकर बात कर सकें। वह अपनी अनुभूतियों और भावनाओं को प्रकट कर सके और मां-बाप के डर या रौब के दबाव

में किसी हीनता के शिकार न हो जाएं। बच्चों में मित्रता की भावना भरोसे और विश्वास से पैदा होती है। कम-से-कम पांच वर्ष की उम्र के बाद तो बच्चे को दोस्ती और प्यार से हर तरफ मोड़ा जा सकता है और उसे निश्चित तरीके से अच्छे आचार-विचार, प्रगति और शिष्टाचार की शिक्षा दी जा सकती है।

बच्चे को यह अनुभव नहीं होना चाहिए कि उसके मां-बाप उसके लिए जेल के दरोगा या पुलिस के थानेदार हैं। खुद माताओं को भी अपने बच्चों की शरारतों कि शिकायत उनके बाप को नहीं करनी चाहिए। इस तरह से एक तो आमतौर पर बाप सख्ती की नीति अपनाते हैं, दूसरे बच्चों में बाप के लिए भरोसे और विश्वास के बजाय घृणा और अविश्वास के भाव उमड़ने लगते हैं। प्रेम पूर्ण शब्दों से बच्चों के दिल को जीता जा सकता है और सख्ती या मारपीट से बच्चों

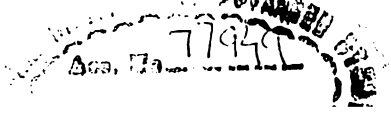

बाप बच्चे को पीटते हुए

को सही रास्ते पर लाना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव हो जाता है। यूनानी दार्शनिक अफलातून का कहना है कि यदि बच्चे का लालन-पालन पूरे भरोसे के साथ किया जाए तो उसमें वीरोचित गुण पैदा होंगे, वह शिष्ट और नेक इन्सान बन जाएगा। और एक अन्य दार्शनिक रूसो ने यह कहकर कायल ही कर दिया कि "बच्चे को मत मारो, वरना वह जंगली और विद्रोही बन जाएगा।"

जरा उस बच्चे की हालत का अंदाज लगाएं जो अपने मां-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी सबको अपना दोस्त समझता है और घर में उसका लालन-पालन इसी वातावरण में होता है। बच्चे की निर्दोष और भोली-भाली बातों और खेलकूद से बच्चे का हौसला बढ़ाया जा सकता है और वह शाम को घर आए मेहमानों के सामने जब अच्छी-अच्छी बातें सुनाता है तो उसके मां-बाप और बड़े-बूढ़े उसकी सराहना करते हैं। इसका यह

असर होता है कि बच्चा हर अच्छे और नेक काम की सराहना प्राप्त करता है और मां-बाप की सहानुभूति, प्रेम और विश्वास को अधिक से अधिक जीत लेता है।

यह देखा गया है कि कई बच्चों के दिल और दिमाग में भय का भूत पनपता रहता है। कल्पना करें ऐसे बच्चों की, जिनके जीवन का हर क्षण भय अथवा डर से भरा हो, जो हर समय डरते रहें कि कहीं ऐसा-वैसा न हो जाए। वे जवान होकर कोई बड़ा काम नहीं कर सकते, बड़ा कौशल नहीं सीख सकते, बड़ा नाम नहीं कमा सकते और बड़ा सम्मान नहीं पा सकते। जो बचपन में सामान्य तौर पर भय, डर और त्रास के दौर में पला हो, उसकी जवानी महान नहीं हो सकती। यहां एक बात कहना आवश्यक है कि अगर मां-बाप गरीबी अथवा सामाजिक पिछड़ेपन के शिकार होंगे तो उन बच्चों का भविष्य ईश्वर भी उज्ज्वल नहीं बना सकता। यदि

मां-बाप कुछ सूझबूझ से बच्चों की औसत देखभाल या लालन-पालन करें तो वे उन्नति-शील हो सकते हैं और जीवन में कुछ-न-कुछ बन सकते हैं।

समान नीति

बच्चों की देखभाल में मां और बाप दोनों का बड़ा योग होता है, किन्तु दोनों की संरक्षता और देखभाल में तालमेल होना आवश्यक है। बच्चों के प्रति जो भी रवैया, व्यवहार या पद्धति अपनाई जाए, उसमें एक समानता होनी चाहिए। अगर मां और बाप दोनों समान नीति पर चलें तो बच्चों पर इसका गहरा असर होता है। एक उदाहरण लीजिए। बाप चाहता है कि छोटी-छोटी शरारतों पर बच्चों को डांटा जाए मां उनकी उपेक्षा करना ज्यादा अच्छा समझती हैं अथवा

मां सख्ती करती है और बाप नरम दिल होता है। एक उदाहरण और, आपकी इच्छा तो यह होती है कि जब आप थके-मांदे घर आयें तो किसी तरह का शोर-गुल न हो, किन्तु मां बच्चों को शोर मचाने से नहीं रोकती। वह चाहती है कि बच्चे उछलें-कूदें

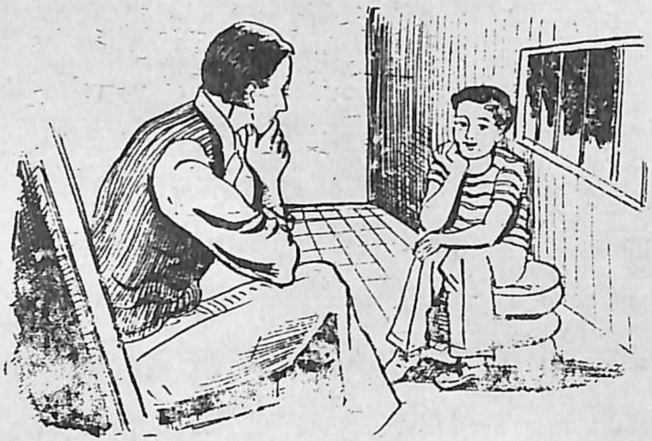

बाप बच्चे को समझाते हुए

और शोर मचाएं। इसी में उसे राहत मिलती है। एक शिक्षा-शास्त्री का कहना है "जीवन की सही मंजिल यह है कि बच्चे में शिष्टाचार पैदा किया जाए। इसके सहारे

जीवन की कई समस्याएं हल हो जाएंगी।"

देखना यह है कि बच्चों के लालन-पालन या देखभाल का अधिक बोझ किस पर है। आमतौर पर बाप के पास तो इतना समय होता नहीं कि परिवार के लिए कमाने का भी काम करे और बच्चों की देखभाल की ओर भी ध्यान दे सके। वह दिन-भर काम-धन्धा या नौकरी करता है वह स्वभावतः अपने बच्चों की आदतों और उनकी भावनाओं को समझ नहीं पाता। उसे नित्य प्रति जीवन में इतना अवकाश कहां होता है कि आधुनिक मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को पढ़कर या अपना कर बच्चों का लालन-पालन कर सके।

कुछ बाप ऐसे भी होते हैं जो नए सिद्धातों को केवल कृत्रिम ही समझते हैं। यह उनकी एक बड़ी भूल है। अगर नए जमाने में बच्चों को शिक्षा देनी है, उन्हें सभ्य और शिष्ट नागरिक बनाना है तो उनका लालन-पालन नए ढंग से ही करना होगा। अच्छी फसल पैदा करने

के लिए नए-नए औजारों, नई खादों और विशेषज्ञों की सलाह की आवश्यकता होती है। यही हाल बच्चों की देखभाल का है। जब बाप नए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से परिचित होगा और मां उन्हीं सिद्धांतों के अनुसार बच्चों का लालन-पालन करेगी तो वे अवश्य प्रगति करेंगे। अगर बाप नए दृष्टिकोण को जरूरी समझता है और मां पुराने विचारों की और लकीर की फकीर होगी तो बच्चों का ठीक लालन-पालन नहीं हो सकेगा। इस तरह की दुरंगी नीति का बच्चों पर क्या असर होगा? बाप की नरमी और मां की सख्ती बच्चों को परेशान कर देगी। वे दो नावों में सवार होंगे। इसलिए बच्चों के सही लालन-पालन के लिए मां-बाप को एक समान नीति अपनाना और मिलजुल कर उनके साथ समान व्यबहार करना बहुत आवश्यक है।

व्यावहारिक पाठ

बच्चों को कोई नेक काम सिखाना हो तो उसके लिए व्यावहारिक पाठ बहुत आवश्यक है। आप जबानी एक बात कई वर्षों तक बतलाते रहें अथवा दोहराते रहें तो इसका असर नहीं हो सकता। हां, अगर आप वह काम अपने हाथ से करके दिखाएं अथवा कोई नेक काम स्वयं करके बताएं तो बच्चा इस काम को कई बार करने से उसका अभ्यस्त हो जाएगा। ज्यों-ज्यों वह आपके आदेश पर अमल करेगा, वह सफलता के नजदीक पहुंचता जाएगा। उसकी हिम्मत बढ़ेगी और काम में कुशलता आएगी। देखा गया है कि अगर शिक्षक और मां-बाप हर नए काम में बच्चों की पीठ थपथपाते रहें तो बच्चा ज्यादा उत्साह और दिलचस्पी से काम करता है।

मां-बाप को प्रेमपूर्ण बर्ताव के साथ बच्चों

को व्यावहारिक शिष्टाचार, आदर्श जीवन, सच्चाई, पवित्रता और नेकी की शिक्षा देना भी बहुत आवश्यक है। अच्छे आचरण, सच्चाई और मनुष्यता के बिना कोई प्रगति या निर्माण सही अर्थों में नहीं हो सकता। बच्चे में मानवी सहानुभूति की भावनाएं उभारी जानी चाहिए, ताकि वह मुसीबत में दूसरों के काम आने का अभ्यस्त हो जाए। सहानुभूति और सच्चाई से स्वार्थ की भाबनाओं को नियंत्रित किया जा सकता है। स्वार्थ सांसारिक प्रगति में इतना व्याप्त है कि आप अपनी भलाई में ही जुटे रहते हैं। मां-बाप को बच्चों के दिमाग में निःस्वार्थ सेवा की भावना अवश्य पैदा करनी चाहिए, जिससे दूसरों की भलाई भी संभव हो सके। यदि हम बच्चों में सद्भावना पैदा करें तो उससे बच्चों को भी प्रसन्नता और आत्म-संतोष प्राप्त होगा।

कोई न कोई आदर्श

आम बच्चे इतने समझदार नहीं होते कि उनके सम्मुख कोई अपना आदर्श हो, । आदर्श को सिद्ध करने के लिए अपना पूरा जीवन खपा देना पड़ता है। सामान्य स्तर के कई बच्चों के सामने भी कोई न कोई आदर्श होता है। ऐसी दशा में मां-बाप को उनके आदर्श की ओर बढ़ने में बच्चे से पूरा सहयोग करना चाहिए। यह आदर्श कोई शैक्षणिक लक्ष्य, कोई कला-कौशल, चित्र-कारी, मूर्तिकला या साहित्य का क्षेत्र हो सकता है। हर बीज का अपना गुण होता है। प्रकृति का कमाल यह भी है कि विरासत में बिल्कुल कुछ न होते हुए भी बच्चे कुछ-से-कुछ बन जाते हैं। दुनिया के कई महापुरुष आम तौर पर बड़े बाप के बेटे न थे। हां उनके सामने एक आदर्श था, दूसरे दृढ़-

विश्वास और तीसरे लगन और परिश्रम ! जिनके सहारे वे अनुकूल या प्रतिकूल दोनों प्रकार की परिस्थितियों में अपनी मंजिल की ओर बढ़ते रहे और अन्त में सफलता प्राप्त की ! दूसरें शब्दों में आम आदमी के बच्चे परिश्रम और लगन से जीवन में अपना नाम ऊंचा कर सकते हैं और मां-बाप का नाम भी उज्ज्वल कर सकते हैं !

●●

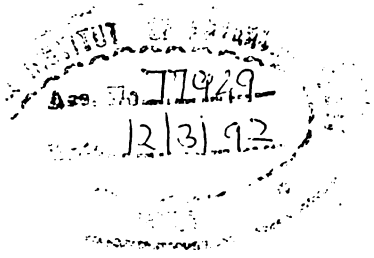

Library IIAS, Shimla
H 028.5 L 15 B
00077949